

कीमत नहीं, करता यहाँ, इंसान अपनी जान की
इज्जत, बिगाड़ डाली है, स्वधर्म और ईमान की
कीमत नहीं - - - - - इज्जत बिगाड़ - - - - -

① क्यों गन्दगी में ईसा, जन्नत बना रहा
अब आ गई जरूरत, शाही निदाम की
इज्जत, बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -

② भारत ने, तुमको, हर समय, सदाशान ही दिया
करती, क्यों ढगमगा रही भारत महान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -

③ इन्हे कौन दे सलीका ये शैब दिखाते
करते बढ़ाई, मुख से ये बे-ईमान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -

④ नापाक इशारे का यहाँ दौर चल रहा
परवा नहीं है, इसको अब अपनी जुवान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -

⑤ ईसान तो दिखता मगर, ईसानियत नहीं
भगता है, भूल बैठा है, हर बात, ज्ञान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -

- ④ इंसानियत का उठ गया, दुनियां से जनाजा
जिससे बिगड़ती जा रही, हालत, जहन की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -
- ⑤ इज्जत का ख्याल, छोड़कर, वैशेष है, इसा
परवा, नहीं है, अब इसे, चुद्ध खानदान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -
- ⑥ आपस की, दुश्मनी ने, दिल को, हिला दिया
कर फ्रिक, अब "श्री बाबा श्री", भारत की, शान की
इज्जत बिगाड़ - - - - - कीमत नहीं - - - - -